शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

foKfIr

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

rjkiFk dh dUnh; xfrfofèk;k dk lokfèkd ykdfi; lkIrkfgd e[ki=k

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक २५ : नई दिल्ली : २३-२९ सितम्बर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण ५२ तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी ९१, सर्व १४३, सानंद जसोल में चातुर्मासिक प्रवास कर रहे हैं। धर्म प्रभावना उत्तरोत्तर विकासोन्मुख है। श्रद्धालुओं के आवागमन का क्रम निरंतर जारी है। २९ सितम्बर से ३ अक्टूबर तक प्रेक्षाध्यान शिविर एवं ८-१० अक्टूबर को अखिल भारतीय महिला मंडल का वार्षिक अधिवेशन समायोज्य हैं। रात्रिकालीन कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर रामायण के सरस आख्यान का वाचन करते हैं, जिसमें श्रोता बड़ी संख्या में संभागी बनते हैं।

le> ikik dk<

vkpk; egkJe.k

आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--**ykgk l0ofo.kkl.kk**--लोभ सर्वनाशक है। विनाश करने वाले अनेक तत्त्व हैं। क्रोध प्रीति का नाश करता है, मान विनय का नाश करता है, माया मित्रों का नाश करती है, किन्तु लोभ तो सब कुछ नष्ट करने वाला है। प्रेम, विनय और मित्रता का नाश भी क्रोध के द्वारा हो सकता है। प्रश्न हुआ कि पाप का बाप कौन? उत्तर में कहा गया--लोभ पाप का बाप है। एक लोभ के कारण आदमी कितने-कितने पाप कर लेता है। इसके लिए वह हिंसा करता है, झूठ बोलता है, चोरी करता है। अनेक पापों का जनक लोभ होता है। हमारे भीतर अनेक दुर्वृत्तियां हैं। उनमें एक है लोभ की वृत्ति। जिस आदमी में लोभ प्रबल है, उसमें तनाव ज्यादा हो सकता है। जो लोभमुक्त हैं, निर्लोभी है, निःस्पृह है, वह व्यक्ति शान्त और तनावमुक्त रह सकता है। इच्छा का कोई पार नहीं है। उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया--

tgk ykgk rgk ykgk ykgk ykgk ioM<bA

जैसे-जैसे लाभ होता है, वैसे-वैसे लोभ बढ़ता जाता है। लाभ से लोभ बढ़ता है। 'दोमासकयं कज्जं कोडीए वि न निट्ठियं'--दो मासा सोना पाने का इच्छुक कपिल कितनी आकांक्षा पाल बैठा। प्राचीन शास्त्र में कपिल ब्राह्मण की कथा आती है, जो इस प्रकार है--कौशाम्बी नगरी में जितशत्रु राजा राज्य करता था। उसकी सभा में चौदह विद्याओं का पारगामी काश्यप नाम का ब्राह्मण था। उसकी पत्नी का नाम यशा और पुत्र का नाम कपिल था। राजा काश्यप से प्रभावित था और उसका बहुमान करता था। अचानक काश्यप की मृत्यु हो गई। उस समय कपिल की अवस्था बहुत छोटी थी। राजा ने काश्यप के स्थान पर दूसरे ब्राह्मण को नियुक्त कर दिया। वह ब्राह्मण जब घर से दरबार जाता, तब घोड़े पर आरूढ़ हो छत्र धारण करता था। काश्यप की पत्नी यशा जब यह देखती तो पति की स्मृति में विह्वल होकर रोने लगती थी। कुछ काल बीता। कपिल अब बड़ा हो गया था। एक दिन जब उसने अपनी मां को रोते देखा तो उसका कारण पूछा। यशा ने कहा--'पुत्र, एक समय वह था, जब तुम्हारे पिता इसी प्रकार छत्र लगाकर दरबार में जाया-आया करते थे। वे अनेक विद्याओं के पारगामी थे। राजा उनकी विद्याओं से प्रभावित था। उनके निधन के बाद राजा ने उनका स्थान दूसरे को दे दिया है।' कपिल ने कहा--'मां! मैं भी विद्या पढ़ूंगा।'

यशा ने कहा--'पुत्र, यहां सारे ब्राह्मण ईर्ष्यालु हैं। यहां कोई भी तुझे विद्या नहीं देगा। यदि तू विद्या

प्राप्त करना चाहता है तो श्रावस्ती नगरी में चला जा। वहां तेरे पिता के परम मित्र इन्द्रदत्त नाम के ब्राह्मण हैं। वे तुझे विद्या पढ़ाएंगे।'

कपिल ने मां का आशीर्वाद लेकर श्रावस्ती की ओर प्रस्थान किया। अपने समक्ष एक अपरिचित युवक को देखकर इन्द्रदत्त ने पूछा--'तुम कौन हो, कहां से आए हो और यहां आने का क्या प्रयोजन है?'

कपिल ने सारा वृत्तान्त सुनाया। इन्द्रदत्त कपिल के उत्तर से बहुत प्रभावित हुआ। उसने उसके भोजन की व्यवस्था शालिभद्र नामक एक धनाढ्य वणिक के यहां करके अध्यापन शुरू कर दिया। कपिल प्रतिदिन सेठ के यहां भोजन करने जाता और इन्द्रदत्त से अध्ययन करता। उसे एक दासी की पुत्री भोजन परोसा करती थी। वह हंसमुख स्वभाव की थी। वह उसके प्रति आकर्षित हुआ और शनैः शनैः उसके साथ कपिल का संबंध प्रगाढ हो गया। एक बार दासीपुत्री ने कपिल से कहा--'तुम मेरे सर्वस्व हो। लेकिन तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है और मैं भी जीवन-निर्वाह के लिए दूसरों के यहां रह रही हूं, अन्यथा मैं तुम्हारी आज्ञा में रहती।'

इस प्रकार बहुत दिन बीत गए। दासी-महोत्सव का दिन निकट आया। दासी का मन बहुत उदास हो गया। रात्रि में उसे नींद नहीं आई। कपिल ने इसका कारण पूछा तो उसने कहा--'दासी महोत्सव आ गया। मेरे पास फूटी कौड़ी भी नहीं है। मैं कैसे महोत्सव मनाऊं? मेरी सखियां मेरी निर्धनता पर हंसती हैं और मुझे तिरस्कार की दृष्टि से देखती हैं।' कपिल का मन खिन्न हो गया। उसे अपने अपौरुष पर रोष आया। दासी ने कहा--'तुम अपना धैर्य मत खोओ। समस्या का एक समाधान भी है। इसी नगरी में धन नाम का सेठ रहता है। जो व्यक्ति प्रातःकाल उसे सबसे पहले बधाई देता है, उसे वह दो मासा सोना देता है। तुम वहां जाओ और प्रातःकाल सबसे पहले बधाई देकर दो मासा सोना ले आओ। उससे प्रसन्नता के साथ मैं महोत्सव मना लूंगी।'

कपिल ने उसकी बात मान ली। कोई व्यक्ति उससे पहले न पहुंच जाए, यह सोच वह तुरन्त घर से रवाना हो गया। रात्रि का समय था। नगर आरक्षक इधर-उधर घूम रहे थे। उन्होंने कपिल को चोर समझ कर बांध लिया और प्रभात में उसे प्रसेनजित राजा के समक्ष उपस्थित किया। राजा ने उससे रात्रि में अकेले घूमने का कारण पूछा तो कपिल ने सहज व सरल भाव से सारा वृत्तान्त सुना दिया। राजा उसकी स्पष्टवादिता पर बहुत प्रसन्न हुआ और बोला--'ब्राह्मण! मैं तुझ पर बहुत प्रसन्न हूं। तू जो कुछ मांगेगा, वह तुझे मिलेगा।' कपिल ने कहा--'राजन्! मुझे कुछ सोचने का समय दिया जाए।' राजा ने कहा--'यथा इच्छा।'

कपिल राजा की आज्ञा से अशोक वाटिका में चला गया। वहां उसने सोचा--दो मासा सोने से क्या होगा? क्यों न मैं सौ मोहरें मांग लूं। चिन्तन आगे बढ़ा। उसे सौ मोहरें भी तुच्छ लगने लगीं। हजार, लाख, करोड़ तक उसने चिंतन किया, परन्तु मन नहीं भरा। संतोष के बिना शान्ति कहां? उसका मन आन्दोलित हो उठा। तत्क्षण उसे समाधान मिल गया। मन वैराग्य से भर उठा। चिंतन का प्रवाह मुड़ा। उसे जातिस्मृति ज्ञान प्राप्त हो गया। वह स्वयं बुद्ध हो गया। वह स्वयं अपना लुंचन कर प्रसन्न वदन हो राजा के पास आया। राजा ने कहा--'क्या सोचा, बताओ?'

कपिल ने कहा--'राजन्! समय बीत चुका है। आपके राजकोष की सारी वस्तुएं मुझे तृप्त नहीं कर सकीं। किन्तु उनकी अनाकांक्षा ने मेरा मार्ग प्रशस्त कर दिया। जहां लाभ है, वहां लोभ है। ज्यों-ज्यों लाभ बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों लोभ भी बढ़ता जाता है। दो मासा स्वर्ण की प्राप्ति के लिए मैं घर से निकला था, किन्तु मेरी तृप्ति करोड़ में भी नहीं हुई। तृष्णा अनंत है। उसकी पूर्ति वस्तुओं की उपलब्धियों से नहीं होती। वह होती है त्याग से, अनाकांक्षा से।' राजा ने कहा--'ब्राह्मण! मेरा वचन पूरा करने का मुझे अवसर दो। मैं करोड़ मोहरें देने के लिए भी तैयार हूं।' कपिल ने कहा--'राजन्! तृष्णा की अग्नि अब शान्त हो गई है। मेरे भीतर करोड़ से भी अधिक मूल्यवान वस्तु पैदा हो गई है। मैं अब करोड़ मोहरों का क्या करूं?'

कभी-कभी ऐसा होता है कि भीतर का परिणाम जाग जाता है और सारा लोभ समाप्त हो जाता है। गृहस्थ लोग अपने भीतर झांकें और देखें कि भीतर लोभ की वृत्ति कितनी है? लोभ कम या ज्यादा अथवा बहुत ज्यादा किसी में विद्यमान हो सकता है। आकांक्षा हर किसी में मिल सकती है, किन्तु बुरी बात यह है कि उस आकांक्षा की पूर्ति के लिए आदमी अनुचित साधनों का सहारा लेने का प्रयास करता है।

परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने अर्थ के संदर्भ में दो शब्दों का प्रयोग किया--अर्थ और अर्थाभास। ईमानदारी से जो पैसा अर्जित किया जाता है, वह अर्थ है और जो अप्रामाणिकता से अर्जित किया जाता है, वह अर्थाभास है, शुद्ध पैसा नहीं है। आदमी को अर्थाभास से बचना चाहिए। पैसे के प्रति आसक्ति से यथासंभव बचने का प्रयास करना चाहिए। लोग संस्थाओं को दान देते हैं और कई बार घोषणा यह करते हैं कि मैंने इतने का विसर्जन किया है। इसे विसर्जन नहीं कहना चाहिए। यह अनुदान है, आर्थिक सहयोग है, सामाजिक या लौकिक कार्य है। इसे विसर्जन की संज्ञा नहीं दी जानी चाहिए। विसर्जन तो शुद्ध त्याग होता है। जैसे--आपने संकल्प कर लिया कि अमुक दिन के बाद इतनी संपत्ति से ज्यादा अपने पास रखने का मुझे त्याग है। इसे इच्छा परिमाण व्रत कहते हैं। इसमें एक सीमा से अधिक संग्रह का त्याग हो जाता है।

इच्छा के संदर्भ में तीन शब्दों का प्रयोग होता है--'अनिच्छ, अल्पेच्छ और महेच्छ। एक गृहस्थ के लिए अनिच्छ होना बहुत कठिन है। किन्तु वह महेच्छ न बने। एक अवस्था आ जाने के बाद आदमी को अपनी इच्छाओं का और अधिक सीमाकरण कर लेना चाहिए। उसे स्वाध्याय, ध्यान साधना और धर्म की दिशा में विशेष रूप से स्वयं को मोड़ लेना चाहिए।

लोभ के कारण आदमी अनेक पाप कर लेता है। कभी-कभी तो वह हत्या जैसा क्रूर और जघन्य कृत्य भी कर लेता है। आदमी संतोष करना सीखे।

परिवार के वृद्ध व्यक्ति संतोष धारण कर लें कि जीवनयापन के लिए मुझे जो साधन सामग्री चाहिए, उतनी मिल रही है तो मैं संतोष रखूं। श्रावक के तीन मनोरथों में एक मनोरथ है--कब मैं अल्पमूल्य एवं बहुमूल्य परिग्रह का प्रत्याख्यान करूंगा। एक मकान से मेरा काम चल जाता है तो तीन मकान अपनी मिल्कियत में क्यों रखूं? परिग्रह जितना कम हो उतना ही अच्छा है। धन-धान्य, हिरण्य, सुवर्ण जमीन-जायदाद आदि के स्वामित्व से जितना मुक्त हुआ जा सके, उतना ही अच्छा है। साधु तो अकिंचिनता की साधना करने वाला होता है। पुराने समय में गुरुदेव तुलसी पंचमी समिति के लिए पधारते तो लोग घोष लगाते। उसकी भाषा लगभग यही रही होगी--'त्रिलोकी रा नाथ नै घणी-घणी खम्मा।' मैंने सोचा--'गुरुदेव तो अकिंचन हैं, फिर त्रिलोकी के नाथ कैसे हुए? फिर मनन करने पर ज्ञात हुआ कि जिसके पास करोड़ है, वह करोड़ों का मालिक है, जिसके पास अरब-खरब है, वह अरबों-खरबों का मालिक है। किन्तु वे तीन लोक के मालिक नहीं हैं। तीन लोक का मालिक वही हो सकता है, जिसने सब कुछ त्याग दिया। एक अपेक्षा से वह सबका मालिक हो जाता है। संस्कृत में कहा गया--

vfdpuk-gfeR;kLo =kykD;kf/kifrHkoS%A
;kfxxE;kfen ikg% jgL; ijekReuS%AA

मैं अकिंचन हूं, इस प्रकार की भावना से अपने आपको भावित कर जो अकिंचन बन जाता है, वह तीन लोक का अधिपति बन जाता है। फिर मैंने निष्कर्ष निकाला कि गुरुदेव तुलसी परिग्रह के त्यागी थे, इसलिए लोग उनको तीन लोक का नाथ कहते थे, ऐसा लगता है। परिग्रह का अल्पीकरण अभ्यास के द्वारा हो सकता है। लोभ को जीतने का उपाय है--जीवन में संतोष का विकास करना। साधु को संतोषी होना चाहिए। खाने को भिक्षा में जो मिल गया, रहने के लिए जैसी जगह मिल गई, उसमें संतोष रखे। किसी वस्तु विशेष की आकांक्षा नहीं रखनी चाहिए।

एक संत के पास कई भक्त लोग बैठे थे। संत ने उन्हें संबोधित कर कहा--'आप लोग हमसे ज्यादा बड़े त्यागी हो।' भक्तों ने कहा--'महाराज! यह आप क्या कह रहे हैं? हमसे बड़े त्यागी तो आप हैं, हमारी आपकी क्या तुलना? हम तो संसारी लोग हैं, माया-मोह में पड़े हुए हैं।'

संत ने कहा--'मैंने तो परम सुख को पाने के लिए संसार के तुच्छ भोगों का त्याग किया है, जबकि आप लोगों ने तुच्छ भोगों के लिए परम सुख का त्याग कर दिया। इसलिए बड़े त्यागी तो आप लोग हैं।'

मेरी दृष्टि में वे माता-पिता भी धन्य हैं, जो अपनी संतानों को त्यागी बनने की दिशा में आगे बढ़ा देते हैं। मैं तो त्याग-वैराग्य की दिशा में नहीं बढ़ सका, पर मेरी संतान तो उस दिशा में आगे बढ़े, कुछ ऐसी भावना उनके मन में रहनी चाहिए। कहा गया है--'नहि रागसमं दुःखं, नहि त्यागसमं सुखम्।' राग के समान कोई दुःख नहीं और त्याग के समान कोई सुख नहीं। आदमी को राग और विशेष रूप से अप्रशस्त राग से मुक्त होने का विशेष अभ्यास करना चाहिए। भोग से योग की ओर, राग से त्याग की ओर, मनोरंजन से आत्मरंजन की ओर, लोभ से संतोष की ओर आगे बढ़ना महत्त्वपूर्ण बात है। लोग धनार्जन करते हैं। यदि वे उसमें ईमानदारी रखते हैं तो इसे मैं उनके लोभ का त्याग ही मानूंगा। जो लोग प्रामाणिकता से व्यवसाय करते हैं, उनमें एक सीमा तक अलोभ या नैतिकता की चेतना का विकास हुआ है, ऐसा माना जा सकता है। आज भी बहुत से लोग ऐसे मिल सकते हैं जो गलत तरीके से अर्थार्जन से बचते हैं। ऐसे व्यापारियों से बाजार मंदार बन जाता है। नैतिकता के द्वारा लोभ की संज्ञा पर चोट पहुंचाई जा सकती है और लोभ को कम भी किया जा सकता है।'

•

ije J); vkpk;Jh egkJe.k tlky e

ifo=k dk;k e dj le; dk fu;ktu

f„ fIrEcjA परमाराध्य आचार्यप्रवर आज प्रातः प्रवास स्थल से तीन किमी. दूर स्थित धोरीनाथ गोशाला परिसर में पधारे। पुरुषोत्तम मास के उपलक्ष्य में श्रीराम जन्मोत्सव समिति द्वारा आज नगर परिक्रमा का आयोजन किया गया। परिक्रमा का मध्य पड़ाव स्थल गोशाला परिसर था। समिति की ओर से श्री देवेन्द्र माली ने पूज्यवर के स्वागत में अपने उद्गार व्यक्त किए। वारिया सम्प्रदाय के महन्त श्री नारायण भारतीजी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने परिक्रमा में संभागियों को संबोधित करते हुए कहा--'परिक्रमा के दौरान चलते-चलते कीर्तन आदि किया जाता है। उसमें आनंद भी आता होगा। उसके साथ जीवन में आचरणात्मक धर्म भी अवतरित होना चाहिए। उसके लिए अहिंसा, ईमानदारी, संयम आदि जीवन में आएं, यह अपेक्षित है। हर व्यक्ति अपना कुछ समय धर्म के लिए नियोजित करे और पवित्र मार्ग पर चलने का प्रयास करे।' पूज्यप्रवर ने 'रामा भजिए रे' गीत का भी संगान किया। इस अवसर पर लोगों ने पूज्यवर से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया।

वीतराग समवसरण में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातःकालीन प्रवचन में कहा--'जीवन क्षणभंगुर है, इसलिए व्यक्ति यथासंभव प्रमाद से बचने का प्रयास करे। समय गतिशील है, वह निरन्तर व्यतीत होता जा रहा है। जो व्यक्ति पवित्र कार्यों में अपने समय का उपयोग करता है, वह अपने जीवन को सार्थक बना लेता है। समय को धन कहा गया है। उसे महत्त्वपूर्ण कार्यों में प्रयुक्त करना चाहिए।' पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'आगम में कहा गया है--'कार्य को कल पर छोड़ने का अधिकार तीन व्यक्तियों को है--जिसकी मौत के साथ मैत्री हो, इतना तेज भागने में सक्षम हो कि मौत की पकड़ में ही न आए और जो अमर हो। किन्तु ये तीनों बातें असंभव हैं। अतः किसी कार्य को कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। हर प्राणी मृत्यु

को प्राप्त होता है। इसलिए जीवन को व्यर्थ कार्यों में न गंवाएं। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। पंडित क्षण को पहचाने। व्यक्ति पवित्र कार्यों में अपने समय को नियोजित कर अपने जीवन को धन्य बनाए।' प्रवचन के पश्चात आचार्यप्रवर ने 'डालिम चरित्र' आख्यान का वाचन किया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरक वक्तव्य हुआ।

पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश हेतु समुद्यत केसिंगा (ओडिसा) से समागत सुश्री अंजली जैन, चंदनबाला जैन, राखी जैन एवं कल्पना जैन ने पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण किया। इस संदर्भ में सुश्री अंजली जैन और श्री शंभूलाल जैन ने अपने श्रद्धासिक्त उद्गार व्यक्त किए। श्री राजेन्द्र भंसाली की मासखमण तपस्या के उपलक्ष्य में उनके परिजनों की ओर से श्रीमती संतोषदेवी भंसाली एवं श्रीमती सरसीदेवी भंसाली ने अपने विचार व्यक्त किए। भंसाली परिवार द्वारा गीत का संगान किया गया।

आज मध्याह्न में परमपूज्य आचार्यप्रवर का मंगल सन्देश लेकर मुनि जिनेशकुमारजी एवं मुनि मदनकुमारजी ने अजमेर स्थित ख्वाजा साहब की दरगाह के लिए बालोतरा-जसोल से प्रस्थान करने वाले पैदल यात्रियों के सम्मान में स्थानीय मस्जिद में समायोजित समारोह में गए। मुनिद्वय ने कार्यक्रम में अपना वक्तव्य भी दिया।

vIr l eDr jg eu

f… flrEcjA प्रातःकालीन कार्यक्रम के अन्तर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'तीन गुप्तियों में प्रथम है--मनोगुप्ति। अशुभ विषयों से मन को निवृत्त कर लेना मनोगुप्ति है। हमारा मन असत् चिन्तन, असत् स्मृति और असत् कल्पना में न जाए, ऐसा प्रयास करना चाहिए। कर्मबंधन का मुख्य कारण है--मनोभाव। यदि व्यक्ति का मन शुद्ध होता है तो वह अनेक प्रकार के पाप कर्मों के बंध से बच जाता है। मन कषायमुक्त बने, ऐसा प्रयास वांछनीय है।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने आगे कहा--'आत्मकल्याण के संदर्भ में मन की सरलता और निर्मलता बहुत महत्त्वपूर्ण है। हम मन की एकाग्रता को साधने का प्रयास करें। जिसके मनरूपी जल में राग-द्वेष की तरंगें नहीं उठती हैं, वह आत्मस्वरूप का दर्शन कर सकता है। मन बंधन और मोक्ष का कारण है। हमारा मन उत्तरोत्तर नैर्मल्य को प्राप्त करे। वह व्यग्र न बने, एकाग्र बने, अस्तव्यस्त न बने, पवित्र चिंतन में व्यस्त बने। मन की निर्मलता और एकाग्रता के द्वारा आत्मोद्धार की दिशा में प्रगति की जा सकती है।'

अपने प्रवचन के पश्चात आचार्यप्रवर ने सरस शैली में 'डालिम चरित्र' आख्यान का वाचन किया। कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री का प्रेरणादायी अभिभाषण हुआ।

lkèoh ojkX;Jhth lekfèkej.k dk l ikIr

गत १६ अगस्त को पूज्यप्रवर से सात दिवसीय तिविहार तपस्या के उपरान्त तिविहार अनशन का प्रत्याख्यान करने वाली साध्वी वैराग्यश्रीजी ने आज सायं ५.५५ बजे समाधिमरण का वरण कर लिया। उल्लेखनीय है--साधु-साध्वियों में परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण के मुखारविन्द से अनशन करने का सौभाग्य प्राप्त करने वाली वे प्रथम साध्वी थीं। वे इस अर्थ में भी सौभाग्यशाली रहीं कि अनशन के दौरान प्रतिदिन पूज्यप्रवर ने दर्शन दिए और वहां कुछ क्षण विराज कर उन्हें गीत, स्तोत्र आदि सुनाए, यदा-कदा कुछ विशेष संबोध भी प्रदान किया।

पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार आज रात्रि में रामायण आख्यान और अग्रिम दिन प्रातःकालीन कार्यक्रम स्थगित रखने की घोषणा की गई।

f† flrEcjA प्रातः सूर्योदय के उपरान्त महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा आदि साध्वीवृन्द आचार्यप्रवर के उपपात में उपस्थित हुईं। महाश्रमणीजी ने साध्वी वैराग्यश्रीजी के अनशन की सानंद संपन्नता के सन्दर्भ

में निवेदन किया। पूज्यप्रवर प्रातःकालीन भ्रमण के कुछ समय पश्चात पार्थिव देह के समीप पधारे और मंगलपाठ का उच्चारण कर पुनः प्रवास स्थल पर पधार गए। प्रातः लगभग ६.३० बजे प्रारंभ हुई साध्वीश्री की अन्तिम यात्रा ओसवाल भवन, चोपड़ावास, इलोजी का चौक, ढेलड़ियावास, धाकों वाली वास, कन्हैयालालजी मंदिर, मेन बाजार, नवकार स्कूल होते हुए ओसवाल मुक्तिधाम के समीपस्थ भूमि पर पहुंची, जहां साध्वीश्री की पार्थिव देह का अन्तिम संस्कार किया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार अन्तिम यात्रा में लगभग पांच हजार व्यक्ति संभागी बने।

lkèoh ojkX;Jhth dh Lefr lHkk

f‡ flrEcjA प्रातःकालीन कार्यक्रम में साध्वी वैराग्यश्रीजी की स्मृति सभा का उपक्रम रहा। उनके संसारपक्षीय परिवार की ओर से पुरुषों और महिलाओं ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया। उनके संसारपक्षीय पुत्र श्री अजित चोरड़िया, चातुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतमचन्द सालेचा, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री खूबचन्द भंसाली ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। उनकी संसारपक्षीया सुपुत्री साध्वी श्वेतप्रभाजी ने साध्वी वैराग्यश्री के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए अपने उद्‌गार व्यक्त किए। उनकी अग्रगण्या शासनश्री साध्वी कमलश्रीजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए साध्वियों के साथ गीत का संगान किया। उनके संसारपक्षीय पुत्र मुनि देवेन्द्रकुमारजी द्वारा प्रेषित मुक्तकों को मुनि जम्बूकुमारजी (मिंजूर) ने प्रस्तुति दी।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'जब से परमपूज्य आचार्यवर ने जसोल में चातुर्मासिक प्रवेश किया है, अनेकानेक विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित हो रहे हैं। लोगों के आवागमन का क्रम प्रतिदिन जारी है। इस प्रवास का एक विशिष्ट उपक्रम रहा साध्वी वैराग्यश्री का संथारा। जैन परंपरा में अनशन का बहुत महत्त्व है। तेरापंथ धर्मसंघ के कई साधु-साध्वियों ने अनशनपूर्वक समाधिमरण का वरण किया है। साध्वी वैराग्यश्री को अनशन के दौरान परमपूज्य आचार्यप्रवर ने प्रतिदिन दर्शन दिए, स्वाध्याय और उपासना से लाभान्वित किया। ऐसा सुअवसर किसी विशिष्ट भाग्यशाली को ही मिलता है। उनका संथारा प्रभावक रहा। इससे जैन शासन और तेरापंथ धर्मसंघ की महिमा वृद्धिंगत हुई। वे एक शान्त स्वभाव की साध्वी थीं। उनकी सरलता, सहनशीलता और संकल्पशक्ति बेजोड़ थी। अनशन के दौरान हजारों लोगों ने उनके दर्शन कर प्रेरणा प्राप्त की। उनके संसारपक्षीय चोरड़िया परिवार को सबसे अधिक लाभ प्राप्त हुआ।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आगमों में मनुष्य जीवन को दुर्लभ बताया गया है। अनंत जीवन वनस्पतिकाय निगोद में रहते हैं, जिन्होंने कभी मानव जीवन का स्पर्श नहीं किया है। इसलिए जिन्हें मनुष्य जन्म प्राप्त हुआ है, उन्हें एक महत्त्वपूर्ण अवसर प्राप्त हुआ है। अब यह बात अवश्य चिंतनीय है कि कौन व्यक्ति इस दुर्लभ मनुष्य जीवन का कितना लाभ उठा रहा है। वे मनुष्य धन्य हैं, जो पवित्र साधना के पथ पर गतिमान हैं। साधु बनना इस अनंतकाल की यात्रा में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। श्रावक होना भी बड़ी बात है। जो चीज देवों को भी उपलब्ध नहीं होती, वह श्रावक को प्राप्त हो जाती है। गुणस्थान के संदर्भ में श्रावक देवों से बड़ा होता है। साधु तो देवों के द्वारा भी पूजनीय होता है। जो व्यक्ति धर्म में रत रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'व्यक्ति आत्मकल्याण और परोपकार की दिशा में प्रयत्न करता रहे, अधिकाधिक शुभयोगों में रहने का अभ्यास करे। साधक मनोयोग के प्रति विशेष रूप से जागरूक रहे, यह अपेक्षित है। यदि मनोयोग शुभ है, पवित्र है तो वह साधक के लिए सुरक्षा कवच है। साधक अपने समय का नियोजन निष्पत्तिपरक कार्यों में करे। वे साधक धन्य होते हैं, जिनका चित्त शुभ भावों से भावित रहता है।' चतुर्दशी होने के कारण आचार्यवर ने आज हाजरी का संक्षिप्त वाचन भी किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने साध्वी वैराग्यश्री के संदर्भ में कहा--'साध्वी वैराग्यश्री को मैं पहले विशेष नहीं जानता था। इस बार उन्हें निकटता से देखा तो लगा कि वे एक समझदार साध्वी हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार उनका जन्म चूरू के कोठारी परिवार में हुआ। साध्वीप्रमुखा सरदारांजी इसी परिवार से संबद्ध थीं। गार्हस्थ्य में साध्वी वैराग्यश्री वरजूबाई के नाम से जानी जाती थीं। उनका विवाह टमकोर के बच्छराजजी चोरड़िया के साथ हुआ। अपने छह पुत्र-पुत्रियों में से एक पुत्र (मुनि देवेन्द्रकुमारजी) को धर्मसंघ में समर्पित किया। वि.सं.२०४६ में लगभग ५६ वर्ष की अवस्था में वे स्वयं अपनी पुत्री (साध्वी श्वेतप्रभाजी) के साथ परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के द्वारा धर्मसंघ में दीक्षित हुईं। दीक्षा के बाद लगभग तीन वर्षों तक साध्वी कमलश्रीजी के साथ रहीं। उसके बाद लगभग पांच वर्ष तक साध्वी गुणवतीजी के साथ रहने के उपरान्त अंतिम दिन तक साध्वी कमलश्रीजी के साथ रहीं। साध्वी सूरजकुमारीजी और साध्वी गुणवतीजी उनकी संसारपक्षीया ननद थीं।

साध्वी वैराग्यश्री एक जागरूक, अल्पभाषी और पापभीरु साध्वी थीं। मैंने उनमें संकल्प की दृढ़ता देखी। अस्वास्थ्य की स्थिति में उन्होंने तपस्या प्रारंभ की। अस्पताल में भर्ती होने के चिकित्सकीय परामर्श को उन्होंने नकार दिया। मेरे सामने उन्होंने अनशन करने की दृढ़ भावना व्यक्त की। मैंने उनकी भावना को परखा और साध्वीप्रमुखाजी से परामर्श कर प्रथम भाद्रपद कृष्णा चतुर्दशी को तिविहार तपस्या के आठवें दिन उन्हें तिविहार अनशन का विधिवत प्रत्याख्यान करवाया। तिविहार तपस्या सहित अनशन के ३६वें दिन द्वितीय भाद्रपद कृष्णा द्वादशी को उन्होंने अन्तिम श्वास लिया। अनशन के दौरान साध्वीप्रमुखाजी और साध्वियों से उन्हें आध्यात्मिक सहकार प्राप्त हुआ। साध्वी श्वेतप्रभाजी को भी एक अच्छा मौका मिल गया। अन्तिम दिन तक संसारपक्षीया मां के साथ रहने का अवसर प्राप्त हो गया। मुनि देवेन्द्रकुमारजी उनके संसारपक्षीय पुत्र हैं, अच्छे भले संत हैं।'

साध्वी वैराग्यश्रीजी की स्मृति में चतुर्विध धर्मसंघ ने पूज्यवर के साथ चार लोगस्स का ध्यान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि हिमांशुकुमारजी ने किया।

Kku'kkyk ikè;kid if'k{k.k io'k f'kfoj dk vk;ktu

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में महासभा ज्ञानशाला प्रकोष्ठ द्वारा त्रिदिवसीय ज्ञानशाला प्राध्यापक प्रशिक्षण प्रवेश शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें उनतीस भाई-बहन संभागी बने। ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चोपड़ा ने शिविर के संदर्भ में अवगति दी। मुनि उदितकुमारजी, मुनि हिमांशुकुमारजी, राष्ट्रीय प्रशिक्षक श्री निर्मल नौलखा, श्री डालमचन्द नौलखा, युवकरत्न श्री बजरंग जैन व श्रीमती बबिता चोपड़ा ने शिविर में प्रशिक्षण दिया। शिविर संयोजक थे श्री रतनलाल जैन (दिल्ली)। दो दिन के सघन प्रशिक्षण के बाद तीसरे दिन मूल्यांकन हुआ, जिसमें ग्यारह भाई-बहिन प्रथम लेवल के प्रशिक्षण हेतु चयनित हुए। शिविर समापन के अवसर पर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने प्रेरक उद्‌बोधन में ज्ञानशाला प्राध्यापक प्रशिक्षण शिविर को बढ़ती अपेक्षाओं की संपूर्ति में उपयोगी बताया।

e=kh g nljk dk fgr fpru djuk

f^ flrEcjA प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'व्यक्ति की भावधारा शुद्ध होनी चाहिए। जहां क्रिया होती है, वहां कर्म का बंधन होता है। कर्म ग्रंथि को तोड़ने में विशेष पुरुषार्थ करना होता है। इसके लिए जप, तप, ध्यान आदि के प्रयोग किए जाते हैं। पुरुषार्थ के सम्यक् होने पर चेतना ऊर्ध्वगामी व असम्यक् होने पर अधोगामी बन जाती है। वीतरागता की दिशा में प्रस्थित व्यक्ति क्रमशः कर्म बंधन को शिथिल करता है।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने 'मूल्य मैत्री का' विषयक अपने प्रवचन में कहा--'मैत्री की धारा सतत प्रवाहित रहनी चाहिए। इससे किसी के साथ वैर का अनुबन्ध नहीं चलता। मैत्री की भावना से भावित व्यक्ति ऋजुमना और सब जीवों से खमतखामणा करने में कोई संकोच नहीं करता। **^[kkefe l0o tho l0o thok [ker e---*** यह श्लोक साधु के लिए दोनों समय प्रतिक्रमण के अंतर्गत उच्चारणीय है। गृहस्थों के लिए भी यह प्रेरणादायी पद्य है। दूसरों का हितचिंतन करना मैत्री है।'

परमार्थ, परार्थ व स्वार्थ शब्दों को व्याख्यायित करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'आत्मकल्याण करने व परमात्म पद पाने हेतु व्यक्ति कई उपक्रम करता है। पारमार्थिक शिक्षक संस्था में मुमुक्षु भाई-बहिन परमार्थ की साधना के लिए समुद्यत रहते हैं। परमार्थ का संवेदन जगने पर व्यक्ति उस पथ का पथिक बन जाता है। दूसरों के हित के लिए कुछ करना परार्थ है। आत्महित के लिए करना परमार्थ है और मात्र स्वयं के लिए करना स्वार्थ है। जहां स्वार्थ हावी होता है, वहां मित्रता में बाधा आती है। दुनिया में स्वार्थ चलता है, पर तुच्छ स्वार्थ निंदनीय व गर्हणीय होता है। मैत्री से चित्त में शान्ति रहती है। सबका कल्याण करो, चित्तसमाधि पहुंचाओ, किसी का बुरा मत करो, बुरा मत सोचो तथा सभी प्राणियों के प्रति मंगल मैत्री का भाव रखो।'

कार्यक्रम में उपस्थित भारतीय पर्यटन विकास निगम, नई दिल्ली के चेयरमैन व प्रबन्ध निदेशक डा. ललित के.पंवार ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा--'मेरा प्रयास है कि पर्यटन के माध्यम से जैन धर्म का प्रचार-प्रसार हो, क्योंकि भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित करने व भारत को जगत्गुरु का विरुद प्राप्त कराने में जैन संस्कृति की प्रमुख भूमिका रही है।'

अणुव्रत के क्षेत्रीय प्रभारी श्री ओम बांठिया ने श्री पंवार का परिचय प्रस्तुत किया। साध्वी विनयश्रीजी 'द्वितीय'(श्रीडूंगरगढ़) की प्रेरणा से भरे गए गुरुधारणा के सौ फार्म श्री महेन्द्र सिपानी (नोहर) ने पूज्य चरणों में उपहृत किए।

जसोल में संपन्न चौथी पचरंगी का आज अन्तिम दिन था। क्षेत्र में तप का अच्छा वातावरण है। इससे पूर्व संपन्न आयंबिल अनुष्ठान में छह सौ से भी अधिक भाई-बहन संभागी बने।

exk CyM Mku'ku Mkbo cuj dk vukoj.k

f‰ flrEcjA अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्त्वावधान में उसकी शाखा परिषदों, समाज की अन्य संस्थाओं व स्वयंसेवी संगठनों के सहयोग से आज 'मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव' कार्यक्रम देश भर में छह सौ से अधिक केन्द्रों पर एक साथ आयोजित हुआ। वीतराग समवसरण में इस सन्दर्भ में आयोजित कार्यक्रम में बाड़मेर के सांसद श्री हरीश चौधरी, पचपदरा के विधायक श्री मदन प्रजापत, कर्नल देवानंद लोहामरोड़ ने इस ड्राइव को जनहितकारी बताते हुए इसके लिए जारी बैनर का अनावरण किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्बोधन में मानव जीवन को महत्त्वपूर्ण बताते हुए आत्मा को धर्म से भावित करने की प्रेरणा प्रदान की। मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव उपक्रम से जुड़े कार्यकर्ताओं ने पूज्य आचार्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण किया। इससे पूर्व प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतमचन्द सालेचा ने स्वागत भाषण किया। संचालन अभातेयुप कार्यसमिति के सदस्य श्री कान्तिलाल ढेलड़िया ने किया।

o'khdj.k e=k g eèkj ok.kh dk i;kx

प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'ग्राम की व्यवस्था के अनुरूप चलना ग्राम धर्म है। इसी तरह समाज की व्यवस्था के अनुरूप कार्य करना समाज धर्म है। व्यक्ति समाज से बहुत कुछ पाता है, इसलिए वह उसका ऋणी होता है। जिस प्रवृत्ति से ज्ञान, दर्शन, चारित्र व तप में अभिवृद्धि

होती है, वह लोकोत्तर धर्म है। इससे हटकर एक दूसरे को शारीरिक सहयोग देना सामाजिक धर्म है। व्यक्ति की समझ यथार्थपरक होनी चाहिए। ऐसी समझ से उसका सम्यक्‌दर्शन भी सही होता है।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जैन साधना पद्धति में उल्लिखित गुप्तित्रय का अध्यात्म की साधना में परम महत्त्व है। त्रिगुप्ति की साधना के बिना अध्यात्म की साधना संभव नहीं है। आत्मकल्याण के लिए गुप्ति की साधना परम आराधनीय है। मनोगुप्ति यदि सिद्ध है तो काय व वचन की साधना बहुत कठिन नहीं है। संसार में अनंत-अनंत जीव ऐसे हैं, जिनमें भाषालब्धि नहीं है। मनुष्य की भाषालब्धि विकसित है। दुनिया में विविध प्रकार की भाषाएं हैं। अनेक भाषाओं को जानने वाले लोग भी हैं।'

पूज्य आचार्यवर ने आगे कहा--'व्यक्ति विवेकपूर्वक भाषा के पुद्‌गलों का प्रयोग करे। भाषालब्धि का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। कटु भाषा, अपशब्द और असत्य संभाषण के प्रयोग से बचना हितकर है। मधुर वाणी का प्रयोग एक प्रकार का वशीकरण मंत्र है। व्यक्ति विमर्शपूर्वक बोले, परिमित बोले तथा अपनी कही बात पर दृढ़ रहे। वाचाल के असत्य संभाषण हो सकता है। अनावश्यक न बोलना वाक्‌गुप्ति का महत्त्वपूर्ण सूत्र है।' प्रवचन के अनन्तर आचार्यप्रवर ने 'डालिम चरित्र' पर सरस शैली में व्याख्यान दिया। राजाजी का करेड़ा (भीलवाड़ा) की श्राविका श्रीमती मोहिनीदेवी चावत को पूज्य आचार्यप्रवर ने **^J)k dh ifrefr*** संबोधन प्रदान किया।

lLdkj fuek.k dh fn'kk e dk;jr jg nknk&nknh] ukuk&ukuh

fŠ flrEcjA स्थानीय तेरापंथी सभा व प्रवास व्यवस्था समिति, जसोल के तत्त्वावधान में 'दादा-दादी नाना-नानी शिविर' का समायोजन। सभा के अध्यक्ष श्री खूबचन्द भंसाली ने स्वागत भाषण किया। मुनि जिनेशकुमारजी ने इस संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए। विकास महोत्सव के अवसर पर आचार्यप्रवर द्वारा घोषित सप्तसदस्यीय तेरापंथ विकास परिषद के सातों सदस्य आज उपस्थित थे। संयोजक श्री कन्हैयालाल छाजेड़, सदस्य श्री मांगीलाल सेठिया, श्री सिद्धराज भंडारी, श्री मूलचन्द बोथरा, श्री बनेचन्द मालू, श्री बुद्धमल दूगड़ ने अपने विचार रखे। सदस्य श्री गुलाबचन्द चिंडालिया स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के कारण कार्यक्रम में उपस्थित नहीं हो सके।

मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'अवस्था के साथ अनुभवों में अभिवृद्धि होती रहती है। अपने परिपक्व अनुभव के आधार पर हर व्यक्ति परिवार, समाज व संघ के लिए उपयोगी बनने का प्रयास करे। उसका एक-एक क्षण शुभयोग और शुभलेश्या में बीते। सामान्यतया देखा जाता है कि ढलती उम्र में शारीरिक शक्ति क्षीण होती है, जबकि मानसिक पकड़ बढ़ जाती है। व्यक्ति अपने दायित्वों से मुक्त होकर अपने भीतर में जाने का प्रयास करे।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'जीवन की अनेक अवस्थाएं होती हैं और प्रतिपल अवस्था में परिवर्तन होता रहता है। जीवन की तीन अवस्थाएं मानी गई हैं--बचपन, यौवन और वार्धक्य। कुछ लोगों को बुढ़ापा आता ही नहीं है। बचपन या जवानी में ही वे मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। यह सबके लिए वांछनीय है कि जितना जीवनकाल मिले, उसका अच्छा लाभ उठाएं। साठ-सत्तर वर्ष की अवस्था के बाद तो अपना अधिकतम समय धर्म-ध्यान में व संवर-निर्जरा की साधना में नियोजित करें।' आचार्यवर ने आगे कहा--'दादा-दादी, नाना-नानी को यह सोचना चाहिए कि हम अब भी मोह-माया में निमग्न रहें या अन्तर्मुखी बनकर स्वयं को अध्यात्म साधना में लगाएं? उन्हें संस्कार-निर्माण की दिशा में कार्यरत रहना चाहिए। वे छोटे बच्चों में संस्कारों का बीजारोपण करें, उनमें धर्म व नैतिकता के संस्कार भरें। वृद्धावस्था में वे यह भी ध्यान रखें कि छोटी-छोटी बातों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें। ढलती वय में समय का उपयोग और ज्यादा धर्म-ध्यान में करना चाहिए। वे चित्तसमाधि में रहें। वर्तमान जीवन को

स्वस्थ व सुन्दर बनाते हुए भावी गति के बारे में भी चिंतन करें तथा तदनुरूप क्रियाशील बने रहें।'

इस एकदिवसीय दादा-दादी, नाना-नानी शिविर के विभिन्न सत्रों में मंत्री मुनिश्री, मुनि दिनेशकुमारजी, मुनि जिनेशकुमारजी के विषयबद्ध वक्तव्य हुए। मुनि विजयकुमारजी का गीत, प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री जसराज बुरड़, सभा के मंत्री श्री संपत चोपड़ा, प्रेक्षा प्रशिक्षक श्री मिश्रीमल चौधरी (मुम्बई) के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। मुनि नीरजकुमारजी ने कायोत्सर्ग का प्रयोग करवाया। शिविर में लगभग साढ़े आठ सौ भाई-बहनों ने भाग लिया।

आज प्रातः भ्रमण से लौटते हुए पूज्यवर श्री किस्तूरचन्द सरगरा के निवास पर पधारे। कुछ दिनों पूर्व उनकी धर्मपत्नी का देहावसान हो गया था। उनके निवास पर उपस्थित अड़तालीस गांवों के लगभग एक हजार लोगों को आचार्यवर ने संबोधित किया। आचार्यवर की प्रेरणा से अनेक लोगों ने नशीले पदार्थों का परित्याग किया। आचार्यवर के संबोधन के बाद मुनि जिनेशकुमारजी, मुनि पृथ्वीराजजी के वक्तव्य हुए।

fof"k"V 0;fDrRo g} rjkiFk fodkl ifj"kn d lnL;

नवगठित तेरापंथ विकास परिषद के सातों सदस्यों का नामोल्लेख करते हुए पूज्य आचार्यवर ने उन्हें आगे दर्शन करने का इंगित करते हुए कहा--'ये हमारे समाज के विशिष्ट व्यक्तित्व हैं। इन्होंने अपने ढंग से दायित्व निभाया है, सेवाएं दी हैं और अनुभवी हो गए हैं। विकास महोत्सव पर इनको तेरापंथ विकास परिषद के नये स्वरूप में सदस्य मनोनीत किया है। ये समाज की संस्थाओं को आचार्य की दृष्टि के अनुसार आध्यात्मिक पवित्र परामर्श देने के अणिकारी रहेंगे तथा संघीय विकास के संदर्भ में अपने सुझाव हमें बता सकेंगे। साधु-साध्वियों में बहुश्रुत की भांति श्रावक समाज में तेरापंथ विकास परिषद का स्थान है।

सात सदस्यों का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा--'मूलचन्दजी बोथरा, गुलाबचन्दजी चिंडालिया, सिद्धराजजी भंडारी, बुद्धमलजी दूगड़ जैन विश्वभारती के अध्यक्ष रहे हैं। भंडारीजी परमपूज्य गुरुदेव महाप्रज्ञ के कोबा चतुर्मास के दौरान व्यवस्था समिति के अध्यक्ष रहे हैं। अहिंसा यात्रा की व्यवस्था से भी जुड़े रहे हैं। बुद्धमलजी दूगड़ (रतनगढ़) के सुपुत्र सुरेन्द्रजी, तुलसीजी व कमलजी गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। बनेचन्दजी मालू जय तुलसी फाउंडेशन के मैनेजिंग ट्रस्टी रहे हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञ के श्रीडूंगरगढ़ प्रवास के समय संरक्षक व प्रमुख रहे हैं। मांगीलालजी सेठिया तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक रहे हैं। आचार्यों के दिल्ली प्रवास में ये प्रवास समिति के अध्यक्ष रहे हैं। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी ने इन्हें 'अजातशत्रु' संबोधन से संबोधित किया था। तेरापंथ विकास परिषद के संयोजक कन्हैयालालजी छाजेड़ तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष रहे हैं। ये अ.भा. तेरापंथ युवक परिषद व पारमार्थिक शिक्षण संस्था से जुड़े रहे हैं। साधु-साध्वियों के संदर्भ में अन्तरंग कार्य से संपृक्त रहे हैं। विकास परिषद की तेरापंथ इकाई से भी गहराई से जुड़े रहे। इन सभी सदस्यों के अनुभवों से समाज लाभान्वित होता रहे। अपने विचार व परामर्श से ये शासन की सेवा करते रहें।' मध्याह्न में आचार्यवर की पावन सन्निधि में तेरापंथ विकास परिषद के नये सदस्यों की प्रथम मीटिंग हुई, जिसमें आचार्यवर ने अपना मार्गदर्शन प्रदान किया।

ikfjokfjd lkgkn f'kfoj dk lek;ktu

परमपूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में १२-१४ सितम्बर तक पारिवारिक सौहार्द शिविर समायोजित हुआ। प्रतिदिन मध्याह्न में लगभग दो घंटे तक चलने वाले इस शिविर में लगभग ३०० व्यक्ति संभागी बने। शिविर के दौरान अन्तिम दिन संभागियों को संबोधित करते हुए परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने कहा--'व्यक्ति को पारिवारिक सौहार्द अभीष्ट होता है, किन्तु कई बार असौहार्द की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। जहां सामंजस्य नहीं होता, वहां अशान्ति का वातावरण बन सकता है। दुराग्रह, स्वार्थ और असहिष्णुता सामंजस्य

के बाधक हैं। इसलिए व्यक्ति व्यर्थ के आग्रह में न जाए, उदारता, बड़प्पन तथा सहिष्णुता रखे। एक दूसरे को सहना चाहिए, मौके पर कहना चाहिए और शान्ति से रहना चाहिए।'

इस त्रिदिवसीय अल्पकालिक शिविर में शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि जयकुमारजी और श्री बजरंग जैन के वक्तव्य हुए। मुनि मदनकुमारजी एवं मुनि हिमांशुकुमारजी ने अनुप्रेक्षा के प्रयोग करवाए। मुनि विजयकुमारजी एवं मुनि अनेकान्तकुमारजी ने गीत का संगान किया।

Lefr&lcy

- भीनासर निवासी श्री धूड़चन्दजी सेठिया का पचासी वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। समणी मधुरप्रज्ञाजी के वे फूफाजी थे। वे संघ व संघपति के प्रति गहरी निष्ठा रखने वाले श्रावक थे। साधु-साध्वियों की मनोभाव से सेवा करते थे। सात पुत्र व नौ पुत्रियों का उनका विशाल परिवार है। निधन के समय उनके परिवार में लगभग एक सौ साठ सदस्य थे। सेठिया परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।
- बीकानेर निवासी श्रीमती लक्ष्मीदेवी कोठारी (धर्मपत्नी-स्व.संपतलालजी कोठारी) का देहावसान हो गया। त्याग-प्रत्याख्यान में उनकी रुचि थी। वर्षों से जमीकन्द, रात्रि भोजन एवं इक्कीस द्रव्य के उपरान्त सेवन का परिहार था, जो अंत समय में सात द्रव्य तक पहुंच गया। वे धर्मनिष्ठ, मिलनसार और उदार स्वभाव की श्राविका थीं। प्रतिवर्ष लगभग एक माह तक गुरु उपासना करती थीं।
- बागोर निवासी श्री भंवरलाल बाबेल का असाध्य बीमारी में देहान्त हो गया। वे स्व. मुनि हेमचन्द्रजी के संसारपक्षीय भ्राता थे। बाबेलजी के मन में संघ व संघपति के प्रति अटूट आस्था थी। तीन सामायिक, सचित्त का त्याग व रात्रि भोजन परिहार उनका नित्यक्रम था। उनके सात्विक विचारों के कारण पूरा परिवार नशामुक्त है। सभी सदस्य विशिष्ट दिनों में उपवास करते हैं। पूरा परिवार संस्कारी है।
- लाडनूं निवासी हैदराबाद प्रवासी श्री खींवराज सुराणा का देहावसान हो गया। वे शासनश्री साध्वी भीखांजी (लाडनूं) के मौसेरे भाई थे। श्री सुराणा विवेकशील, श्रमशील, चिंतनशील एवं कर्तव्यनिष्ठ श्रावक थे। वे समाज की कई संस्थाओं से जुड़े हुए थे। तेरापंथ भवन- सिकन्द्राबाद के निर्माण में उनकी मुख्य भूमिका रही।
- फतेहगढ़ निवासी भुज प्रवासी श्रीमती मणीबेन दोशी (धर्मपत्नी-स्व.अमृतलाल दोशी) का आधे घंटे के तिविहार संथारे में स्वर्गवास हो गया। मुनि सिद्धार्थकुमारजी की वह संसारपक्षीया माता एवं मुमुक्षु ख्याति की दादीजी थीं। धर्मनिष्ठ, सरल स्वभावी मणीबेन का मरणोपरान्त नेत्रदान भी किया गया। उनके सुपुत्र उपासक अरविन्दभाई व विनोदभाई क्रमशः भरूंच व भुज के सक्रिय कार्यकर्ता हैं।
- उल्हासनगर निवासी श्रीमती दुर्गा बहन छाबड़िया सिन्धी (धर्मपत्नी-श्री परसरामभाई सिन्धी) का निधन हो गया। परसरामभाई आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' संबोधन से संबोधित थे। दुर्गा बहन के प्रतिदिन दो सामायिक व रात्रि भोजन परित्याग का नियम था। जीवन की सान्ध्य बेला में नियमित जप का क्रम चला। उनके सुपुत्र रमेश, छोटा नारायण आदि सभी में धर्म के अच्छे संस्कार हैं। उनकी पुत्रवधू जयश्री छाबड़िया जिम्मेदार श्राविका है।

flokph&ekyk.kh Lrjh; Jkod lEeyu

परम पावन आचार्यप्रवर के मंगल सान्निध्य में सिवांची-मालाणी क्षेत्रीय संस्थान के तत्त्वावधान में आगामी १७-१८ नवम्बर को सिवांची-मालाणी स्तरीय श्रावक सम्मेलन का समायोजन किया जा रहा है। संस्थान द्वारा सिवांची-मालाणी के निवासी एवं प्रवासी तेरापंथी परिवारों से इस सम्मेलन में संभागी बनने

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

का अनुरोध किया गया है। इस संदर्भ में अधिक जानकारी के लिए मोबाइल नं.०९४१४१२०६३५, ०९४१३४५७७३४ पर संपर्क किया जा सकता है।

lkfgR; idk'ku % c<r pj.k

आदर्श साहित्य संघ ने गत जुलाई से अब तक सत्ताईस पुस्तकें पुनर्मुद्रित की हैं, जिनमें 'धर्म है उत्कृष्ट मंगल' तथा 'अमृत कलश' पुस्तकों के दो-दो संस्करण शामिल हैं। महाप्रज्ञ ने कहा भाग-४३ एवं भाग-४४--ये दो नवीन पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। आदर्श साहित्य संघ द्वारा प्रकाशित परमपूज्य गुरुदेव तुलसी की समस्त कृतियां जन्मशताब्दी वर्ष में नये रूप में आकर्षक साज-सज्जा के साथ वृहद् आकार में पाठकों के लिए उपलब्ध रहेंगी। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी की दो नवीन कृतियां 'बदले युग की धारा' तथा 'आधी दुनिया' अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक प्रकाशित हो जाएंगी।

vkn'k lkfgR; l?k dk HkV

५१००/- स्व. गणेशचन्दजी भण्डारी (सुपुत्र-स्व.श्री पूनमचन्दजी भण्डारी, छोटीखाटू) की स्मृति में उनके भ्राता श्री ताराचन्द भण्डारी, सुपुत्र विनोदचन्द (दिल्ली) डा.अनिल (जयपुर), भतीजे धर्मचन्द (कोलकाता), प्रेमचन्द (दिल्ली), अशोक (हैदराबाद) व कमल (वेलूर) द्वारा प्रदत्त।

३१००/- श्री केसरीमलजी-श्रीदेवी पगारिया (बोरावड़-रायपुर) के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्णजयंती) के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू प्रदीप-बबिता व सुपौत्र पुलकित, हर्ष पगारिया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री मोहनलालजी आंचलिया (सरदारशहर-अहमदाबाद) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती राजूदेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू तेजकरण मंजूदेवी, सुपौत्र व पौत्रवधू सौरभ-मीकू, सुपौत्री दिव्या व प्रपौत्री काव्या आंचलिया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री मनोहरलाल बड़ोत (कुआंरिया) की प्रथम पुण्यतिथि (१२ सितम्बर) परमपूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में नवकार मंत्र के जप के साथ मनाने के उपलक्ष्य में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती भगवतीदेवी, सुपुत्र देवेन्द्र, मुकेश, प्रकाश, सुपौत्र नितिन, निखिल, अर्पित, हर्षित बड़ोत (बड़ोदरा) व पारिवारिक मित्र श्री राणमलजी मेहता (पाली) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्रीमती भंवरीदेवी बोथरा (धर्मपत्नी-स्व.श्री चांदमलजी बोथरा, गंगाशहर) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनकी सुपुत्री व दामाद श्रीमती लक्ष्मीदेवी-भैरूंदान गोलछा तथा दौहित्र व दौहित्री प्रकाश, पारस, राजेश, कुसुम गोलछा, श्रीगंगानगर (राजस्थान) द्वारा प्रदत्त।

i=k 0;ogkj d fy, gekjk irk&&

d'koiilkn pronh] icU/kd&vkn'k lkfgR; l?k] }kjk&vkpk;l egkJe.k iokl 0;oLFkk lfefr]
ik- tlky&…††,„† ft- ckMej ½jktLFkku½ Qku % ‹^Š,,‡‡…Šƒ] ‹…‡„†,†^†ƒ

दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

idk'ku fnukd % „„&‹&„,ƒ„

•

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : d'koilkn pronhA